हमारे तालाबों को बचाना | कक्षा में एक परस्पर क्रिया

अंजु दास मानिकपुरी

कोठारी आयोग से लेकर नई शिक्षा नीति तक कई नीतियों में यह अनुशंसा की गई है कि बुनियादी शिक्षा को पर्यावरण से तथा लोगों के जीवन की आवश्यकताओं और उनकी आकांक्षाओं से जोड़ा जाए। विद्यार्थियों को पर्यावरण के बारे में विचार करने में शिक्षित करने और उन्हें ज़िम्मेदार नागरिक बनाने की दृष्टि से शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। पर्यावरण साक्षरता और उसे बढ़ावा देने में शिक्षकों के प्रयास संवाद के लिए ऐसे अवसर निर्मित करते हैं जिससे पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ती है।

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन शिक्षकों के साथ निकट सहयोग करके सरकारी स्कूलों में बेहतर शिक्षा को सुनिश्चित करने का प्रयास करता है। फ़ाउण्डेशन के सदस्य कक्षाओं में शिक्षकों के साथ सहशिक्षक का कार्य करते हैं ताकि बच्चे सीखने के बेहतर परिणाम हासिल कर सकें। इस सन्दर्भ में पर्यावरणीय साक्षरता को लेकर एक प्रयास किया गया जिसका अनुभव मैं यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ।

पर्यावरण साक्षरता को बढ़ावा देना

इस प्रयास के पीछे मेरा उद्देश्य यह था कि बच्चों को उनके आस-पास के संसार के साथ मेलजोल करने का अवसर दिया जाए। इसके लिए यह आवश्यक है कि बच्चे उनके आस-पास होने वाली घटनाओं का अवलोकन करें, उन्हें दर्ज करें और उन पर विचार करें। यह आवश्यक है कि इसके बाद इस पर विचार किया जाए कि उनके अवलोकनों के पीछे कौन-से सम्भावित कारण हो सकते हैं; उन विधियों को सीखा जाए जिनसे इन कारणों का परीक्षण किया जा सके; इस पर चर्चा की जाए कि कारणों और घटनाओं के बीच क्या कोई सम्बन्ध है और अन्त में, रचनात्मक तथा संवेदनशीलतापूर्वक परिस्थितियों में सुधार करने के लिए हल तक पहुँचा जाए। संक्षेप में, अपने प्राकृतिक पर्यावरण को बेहतर और सुरक्षित बनाने में योगदान देने के अवसर बच्चों को भी प्रदान किए जाएँ।

सन्दर्भ, संवाद और कार्य

जब मैं एक शिक्षिका के साथ पर्यावरण साक्षरता की योजना बना रही थी तब मैंने समाचार पत्र में छत्तीसगढ़ के जल स्रोतों के बारे में पढ़ा। इसमें आँकड़े दिखा रहे थे कि वर्ष 2000 में राज्य के विभिन्न ज़िलों में 2.79 लाख तालाब थे, लेकिन 2020 तक यह संख्या घटकर 1.34 लाख रह गई थी। तालाबों के साथ झीलों की संख्या में भी कमी आई थी।

यह जानकारी आम है कि जल संरक्षण में तालाबों, नहरों और झीलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इन जल स्रोतों के कम होने या विलुप्त हो जाने के कारण अधिकांश स्थानों पर भूजल स्तर में भारी गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप राज्य में कई कुएँ, हैण्डपम्प और पटवन (नगर निकाय का जल स्रोत) के विभिन्न जल स्रोत सूख गए हैं। इसलिए पानी की कमी की समस्या लगातार बनी रहती है।

मैंने उन स्कूलों के परिवेशों का निरीक्षण किया जहाँ मैं जाती रहती हूँ। मैंने पाया कि पानी सरलता से उपलब्ध नहीं होता। शासन द्वारा लगाए गए नलों में निर्धारित समय पर ही पानी आता है। जो लोग इस समयावधि में पानी भरकर संग्रहित नहीं कर पाते उन्हें पानी के बिना, विशेष रूप से पीने के पानी के बिना ही रहना पड़ता है। गर्मी के दिनों में यह समस्या और भी गम्भीर हो जाती है और लोग पानी की आपूर्ति के लिए टैंकरों पर निर्भर रहते हैं। इसलिए मैंने सोचा कि बुनियादी शिक्षा के साथ उपरोक्त सन्दर्भ और पर्यावरण साक्षरता को जोड़ा जाए। मैंने कक्षा-5 के 27 विद्यार्थियों के साथ काम शुरू किया। मेरे काम के पीछे बड़ी प्रेरणा थी जल स्रोतों, विशेष रूप से तालाबों, की कमी को रेखांकित करना।

इस दौरान एक रोचक घटना हुई। हर साल की तरह इस साल भी बच्चे उनकी अन्तिम परीक्षा के बाद उनके रिश्तेदारों के यहाँ जाने की योजना बना रहे थे। अधिकांश बच्चे अपने मामा के घर जाने वाले थे। तो मैंने उनसे निम्नलिखित तीन प्रश्न पूछे :

1. तुम गर्मियों की छुट्टी में कहाँ जा रहे हो?
2. वहाँ तुम्हें कौन-सी गतिविधि सबसे अच्छी लगती है?
3. तुम अब तक उस जगह कितनी बार गए हो? तुमने किस प्रकार के परिवर्तन वहाँ देखे हैं?

लगभग चार पीरियड तक चली इस चर्चा के कुछ अंश निम्नानुसार हैं :

मेरा प्रश्न : अब छुट्टियाँ होने वाली हैं। तुम सब लोग कहाँ जाने वाले हो?

कुछ बच्चों ने कहा कि वे अपने गाँव या अपने रिश्तेदारों के यहाँ जा रहे हैं। कुछ बच्चों ने कहा कि वे अपने मामा के गाँव जाएँगे। कुछ अन्य ने बताया कि वे किसी रिश्तेदार के यहाँ शादी में शामिल होने जाएँगे। शेष बच्चों ने कहा कि वे कहीं नहीं जाने वाले हैं।

मैंने कहा : बहुत बढ़िया! तुम कौन-सी जगहों को जाने वाले हो?

बच्चों ने कई जगहों के नाम बताए जैसे जामगाँव, संकरा, धमतरी, पहाण्डा और भोथाली।

मैंने पूछा : क्या तुम हर साल वहाँ जाते हो? वहाँ जाकर तुम क्या करते हो?

बच्चों ने उत्साहित होकर अपनी गतिविधियाँ गिनवानी शुरू कर दीं — खेलना, गाय का ताज़ा दूध पीना, ननिहाल में बने पकवान खाना और तालाबों में नहाना और तैरना।

उन्होंने यह भी कहा कि उनके घर के पास तैरने की कोई जगह नहीं है लेकिन गाँव में वे न केवल तैर सकते हैं बल्कि सुबह शाम दोनों समय नहा सकते हैं।

मैंने कहा : यह तो बहुत अच्छी बात है। ऐसा लगता है कि तुम्हें वहाँ बहुत मज़ा आता है। तुम्हारी तरह मैं भी छुट्टियों में बिलासपुर के गाँव में अपनी नानी के घर जाया करती थी। उनके यहाँ बहुत सारी गायें थीं और हमें बहुत सारा दूध, दही और घी मिलता था। लेकिन यह बताओ, तुम लोग अपने गाँव इतने सालों से जा रहे हो तो तुम्हें तब और अब में वहाँ कोई फ़र्क़ दिखाई देता है?

बच्चों की चुप्पी से यह स्पष्ट था कि वे मेरे प्रश्न को ठीक से समझ नहीं पाए थे। तब उनकी शिक्षिका ने उनसे छत्तीसगढ़ी में पूछा, "जब तुम पहले गाँव जाते थे तब गाँव कैसा था और अब जाते हो तो तुम्हें कैसा लगता है?"

अब बच्चों के उत्तरों की झड़ी लग गई :

तालाब का पानी उतना साफ़ नहीं दिखाई देता जितना पहले दिखाई देता था।

पहले झील बड़ी होती थीं लेकिन अब वे सिकुड़ रही हैं।

तालाब को गौठान (गौशाला) बना दिया है।

जहाँ पहले गौठान होता था वहाँ घर बना दिया गया है।

बच्चे जिस उत्साह से चर्चा में भाग ले रहे थे उसे देखकर शिक्षिका को काफ़ी आश्चर्य हुआ और उन्होंने मुझसे कहा, देखिए मैम! अब वे कितनी अच्छी तरह उत्तर दे रहे हैं! अन्यथा वे पर्यावरण अध्ययन की पढ़ाई करने के बाद भी उत्तर नहीं लिख पाते हैं। तब मेरी समझ में आया कि परस्पर संवाद के लिए परिचित भाषा में बोलना बहुत आवश्यक है।

बच्चों ने बोलना जारी रखा : घर के बाहर के चबूतरों को तोड़कर घरों को बड़ा किया गया है और घरों को बड़ा बनाने के लिए पेड़ों को काट दिया गया है। इस तरह वह जगह भी चली गई जहाँ हम दौड़ लगाकर थकने के बाद आराम करते थे। कुछ बच्चों ने यह भी कहा कि कोविड-19 की महामारी के समय पैसे की कमी के कारण कुछ परिवारों को अपने खेत और मवेशी बेचने पड़े जिसके कारण अब वे उस ज़मीन से आम और बेर नहीं तोड़ पाते थे जो पहले उनकी ही थी।

अब उन बच्चों के बोलने की बारी थी जो छुट्टियों में कहीं नहीं जा रहे थे। उन्हें अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने और अपने माता-पिता को घरेलू कामकाज में मदद करने के लिए घर पर ही रहना था। उन्होंने कहा कि वे भी पानी की कमी झेलते हैं और गर्मी के मौसम में उन्हें पानी भरने, ले जाने और संग्रहित करके रखने में मदद करनी पड़ती है।

शिक्षिका ने उनकी बातों को सहानुभूतिपूर्वक सुना और उनकी बातों से इत्तफ़ाक़ किया क्योंकि वे छत्तीसगढ़ में पानी की कमी वाले विभिन्न स्थानों में काम कर चुकी थीं।

उन्होंने बच्चों से पूछा : तुमने कहा कि तालाब गन्दा हो गया है और सिकुड़कर छोटा हो गया है। क्या तुम बता सकते हो कि तालाब को कैसे बचाया जा सकता है?

उन्होंने बच्चों को दो समूहों में बाँटा। एक समूह से, जिसे हम गतिविधि समूह कहेंगे, ज़मीन में एक गड्ढा खोदकर उसे पानी से भरने के लिए कहा। जब वह सूख गया तब उसमें तब तक पानी भरा गया जब तक उसका सूखना बन्द नहीं हो गया। दूसरे समूह को, जिसे हम सर्वेक्षण समूह कहेंगे, से कहा गया कि वे गाँव में जाकर लोगों से पूछें कि तालाब के पानी को साफ़ रखते हुए उसे कैसे बचाया जा सकता है।

प्रयोग के परिणाम

दोनों समूहों से कहा गया कि वे अपने अवलोकनों को और रिपोर्टों को लिखकर लाएँ। दूसरे दिन बच्चे परिणामों के साथ तैयार थे। उनका सारांश निम्नानुसार है :

1. गतिविधि समूह का अवलोकन था कि ज़मीन को लगातार गीली रखने से गड्ढे में पानी बना रहता था। शिक्षिका और मैंने गड्ढे की संकल्पना को तालाब से जोड़ा और कहा कि यदि ज़मीन के अन्दर के पानी को बढ़ाना हो तो हमें तालाबों को फिर से जीवित करना होगा।
2. सर्वेक्षण समूह के निष्कर्ष थे कि बढ़ती आबादी, पक्के मकानों का निरन्तर निर्माण और ज़मीन का अन्धाधुन्ध दोहन तालाबों के नष्ट होने के प्रमुख कारण हैं। यह ज़रूरी है कि पेड़ लगाए जाएँ और उन्हें काटा न जाए। तालाबों

को अधिक गहरा करने की आवश्यकता है, न कि उन्हें मिट्टी से भरकर वहाँ चारागाह या मकान बनाए जाएँ।

अन्त ही शुरूआत है

इस वार्तालाप से यह तथ्य उभरता है कि अधिकांश बच्चे इस बात से परिचित हैं कि तालाबों का पानी पहले के समान नहीं है और वह मटमैला दिखाई देता है। बच्चों ने इस समस्या को हल करने का तरीक़ा भी स्वयं खोज लिया।

यह अभ्यास इस धारणा को भी ग़लत साबित करता है कि बच्चों को पढ़ाई अच्छी नहीं लगती या वे कक्षा में बोलते नहीं हैं। यह महत्त्वपूर्ण है कि उनकी जिज्ञासा को स्थान दिया जाए, उनकी बातों को धैर्यपूर्वक सुना जाए और उनके प्रश्नों तथा अनुभवों को सम्मान दिया जाए।

यह केवल एक उदाहरण था। इस प्रकार के कई मुद्दे हैं जिन पर कक्षा में चर्चा करके पर्यावरण तथा पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियों के प्रति सजगता और संवेदनशीलता पैदा की जा सकती है। ऐसे अभ्यास बच्चों को पर्यावरण के बारे में अपनी चिन्ताओं को व्यक्त करने का मौक़ा देते हैं और उसकी गुणवत्ता को बनाए रखने या उसमें सुधार लाने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं। यदि हम चाहते हैं कि बच्चे एक समृद्ध पारिस्थितिक संसार में बड़े हों तो किसी भी अन्य साक्षरता के समान पर्यावरण साक्षरता अनिवार्य है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है कि पर्यावरण साक्षरता प्रायः प्राइमरी स्कूल तक ही सीमित रहती है। आगे की कक्षाओं में पर्यावरण के प्रति सजगता से जुड़ी विषयवस्तु का अभाव होता है। जब बच्चे ख़ुद के जीवन में उन घटनाओं को देखते हैं जिन्हें उन्होंने अपनी पाठ्यचर्या के एक भाग के रूप में पढ़ा है तो उनका सीखना बेहतर और स्थायी हो जाता है। इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार किए जाने की आवश्यकता है कि पर्यावरण से जुड़े मुद्दों को कक्षा में संवाद का हिस्सा कैसे बनाएँ। यदि इसकी आवश्यकता गम्भीरतापूर्वक महसूस नहीं की गई होती तो सुप्रीम कोर्ट ने 1991 में स्कूली पाठ्यचर्या में पर्यावरण साक्षरता को सम्मिलित करने के लिए हस्तक्षेप न किया होता।

References

Kothari Commission, 1964-1966

National Policy on Education, 1968

Public interest litigation,1991

National Curriculum Framework, 2005

New Education Policy, 2020

अंजु दास मानिकपुरी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के रायपुर ज़िला संस्थान में रिसोर्स पर्सन (विज्ञान) हैं। वे रसायनविज्ञान में पीएचडी हैं और इससे पहले वे स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को रसायनविज्ञान पढ़ाती थीं। विज्ञान के अलावा वे भाषा और गणित के शिक्षण में भी संलग्न हैं। उनकी दिलचस्पी विज्ञानों में है, ख़ासतौर से पर्यावरण विज्ञान में। उनसे anju.manikpuri@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अरविन्द गुप्ते **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय